राष्ट्र निर्माण में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की भूमिका

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विष्वविद्यालय

गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारषहर

को

पी–एच.डी. (शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोधकर्त्री

नीतू जैमिनी

iase deemed university

शोध निर्देशक :

प्रो. मनीषा वर्मा

प्रोफेसर (शिक्षा)

2016

बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, (सीटीई) गाँधी विद्या मन्दिर,

सरदारशहर जिला चूरू (राजस्थान)–331401

1. **शोधकर्त्री का नाम** : **नीतू जैमिनी (पंडित)**

2. **शोध का शीर्षक** : राष्ट्र निर्माण में डॉ.एपीजे अब्दुल कलाम के शिक्षा दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Analytical study of the educational philosophy of the Dr.APJAbdul Kalam in Nation building.

3. **अध्ययन का स्थान** : बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,

(सीटीई)

गांधी विद्यामंदिर, सरदार शहर जिला चूरू, राजस्थान

4. **अध्ययन का क्षेत्र** : शिक्षा दर्शन

5. **अध्ययन के उद्देश्य** :

i. डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के जीवन वृत का अध्ययन
ii. डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का अध्ययन
iii. डॉ. एपीजे अब्दुल कलामके शिक्षा दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन
iv. डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों में राष्ट्रीय मूल्यों की चेतना के विकास का अध्ययन
v. डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के राष्ट्र निर्माण एवं कर्मयोग के लिए शैक्षिक विचारों का अध्ययन
vi. डॉ. एपीजी अब्दुल कलाम के राष्ट्र निर्माण में भूमिका का अध्ययन
vii. डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों की प्रासंगकिता का अध्ययन

6. **अध्ययन का महत्व**

शिक्षा शब्द की सिद्धि शिक्ष विद्यो पादाने द्यातु से अड्ण् प्रत्यय से टाप् प्रत्यय लगाकर किया जाता है। शिक्ष्यते अनया इति शिक्षाश् अर्थात जिसके द्वारा वर्ण आदि के उच्चारण का ज्ञान हो वर्ण स्वर मात्रा का ज्ञान हो उसे शिक्षा कहा जाता है। वस्तुत मानव जीवन की सार्थकता और कृतज्ञता उसके सम्पूर्ण सुख

शान्ति में है वह सुख शान्ति का आधार मनुष्य में विविध सद्‌गुणों के आद्यान और विमल ज्ञान की प्राप्ति से सम्भव है। सदाचार और नैतिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा इसमें चार चाँद लगाती है।

गत शताब्दी के अन्तिम चरण में लार्ड मैकाले द्वारा संचालित शिक्षा आधुनिक शिक्षा के प्रारम्भिक तथा अद्युनातन स्वरूपों में भी बहुत परिवर्तन हो चुका है। युग के अनुकूल मानव की समस्या आवश्यकता और आंकाक्षाओं के अनुसार शिक्षा का अध्याय बढ़ता जा रहा है। विश्व के विकसित देशों में जिन वैज्ञानिक अविष्कारों के प्रचार प्रसार से आदि भौतिक सुख समृद्धि की श्री वृद्धि हुई है, जो आज भी हो रही है। उनका प्रभाव भारत पर भी पडना स्वभाविक है। फलतः इसलिए भी वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। किन्तु शिक्षा के मूलभूत उद्देश्यों की पूर्ति में सफलता कम दिखलाई पड़ रही है। हमारे देश के आधुनिक गम्भीर विचारकों ने शिक्षा में जिन तत्वों का आवश्यक समावेश होना चाहिए और अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा होते हुए एक आदर्श और पूर्ण मानव के सृजन में शिक्षा की कृतकार्यता सिद्ध हो सके। उदात विचारों का समय.समय पर प्रकाश किया है। सच्ची बात यह है कि किसी भी राष्ट्र हित उस देश के शिक्षक और शिक्षार्थी के हित पर निर्भर होता है। एक शिक्षक अपने सम्पूर्ण जीवन काल में हजारों विद्यार्थियों को शिक्षित और संस्कारित करता है। इस दृष्टि से शिक्षक ही हमारे भविष्य का संरक्षक है। अतएव शिक्षक की ओर ध्यान देना अपने व समाज के भविष्यए अपने संतती के भविष्य और सम्पूर्ण राष्ट्र के भविष्य की ओर ध्यान देना हैए यह निर्विवाद है कि शिक्षा के स्तर और राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के योगदान में जितनी बातें प्रभावित करती है उनमें शिक्षकों के गुण उनकी क्षमताऐं एवं उनके आचरण सबसे महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से शिक्षण व्यवसाय में पर्याप्त संख्या में योग्य शिक्षकों का चयन होना चाहिए। उन्हे समानपूर्ण व्यवसायिक एवं वैयक्तिक साधन सम्पन्न बनाना चाहिए एवं ऐसी सन्तोषप्रद स्थितियों का निर्माण किया जाना चाहिए जिनसे ये पूर्ण प्रभावी ढंग से अपने कार्य को प्रभावी ढंग से सुसम्पन्न कर सके। उपयुक्त विषर्यान्तर्गत भारतवर्ष के शीर्षस्थ वैज्ञानिक मनीषी राष्ट्रीय चिन्तक डॉ. एपीजे कलाम के शैक्षिक विचारो के सम्पूर्ण स्वरूप पर विचार करने का प्रयास किया जाना शोधकर्त्री का एक सफल प्रयास होगा जो निश्चय ही भारतीय शिक्षा जगत के लिए मील का पत्थर सिद्ध होगा। प्रस्तावित शोध ग्रन्थ के माध्यम से शिक्षा में जो नव प्रयोग हो रहे है तथा जो न्यूनताऐं रह रही है उन सब के निराकरण के लिए यह शोध ग्रन्थ मार्गदर्शक सिद्ध होगा और शिक्षा में इन विचारों के सन्नीवेश से मानवता का महान हित सम्पन्न होगा ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है अतएव इस कार्य की महत्ता एवं उपादेयता स्वतः प्रमाणित होती है।

7. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

शिक्षा का मूल उद्धेश्य शिक्षार्थी को पूर्ण मानव बनाने एवं व्यक्ति और समाज के लिए उपादेय करने हेतु है मानवता का अर्थ है मानव में आदि भौतिक और अध्यात्मिक चिन्तन का पूर्ण समन्वय, जिसके अभाव में मानव दानववत् दुर्गुणों से परिपूर्ण और समाज के लिए कलंक बन जाता है। शिक्षा से मानव जीवन के आदर्श का ज्ञान उच्च चरित्र ज्ञानार्जन की ललक समुचित जीविकोपार्जन का कौशल सत्य, असत्य का परिज्ञान तथा सामाजिक परम्पराओं और मान्यताओं का बौद्ध सम्मिलित है। प्रस्तावित शोध ग्रन्थ के माध्यम से डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का एक ग्रन्थ में शिक्षा विषयक वैचारिक संकलन अवश्यमेव एक नई दिशा देश के कर्णधारों एवं शिक्षा जगत के मनीषीयों को प्रदान करेगी। इसमें कोई सन्देह नही।

1. खरे, उमाकान्त, बुंदेलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रीय कवि पंडित घासीराम व्यास का योगदान (2015)
2. कौषिक, अमृता, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन और महात्मा गांधी (मई 2015)
3. सिंह, ओमवीर, आधुनिक भारत के निर्माण में स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक और राजनैतिक विचारों का योगदान (2015)
4. वर्मा, जयश्री सविनय अवज्ञा में महाकौषल चित्रा का योगदान, एक ऐतिहासिक अध्ययन (दिसम्बर 2015)

8. कार्यों का अध्याओं के अनुसार वर्गीकरण

8. 1 प्रथम अध्याय

8.1.1 प्रस्तावना

शोध की पृष्ठभूमि

शिक्षा मानव जीवन के सन्तुलित निर्माण में नितान्त सहायक है। शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन उसी प्रकार अंधकारपूर्ण है। जैसे. विशाल भवन में प्रकाश का अभाव हो मनुष्य के सर्वांगीण उत्थान में शिक्षा के माध्यम से अनेक गुणात्मक परिवर्तन सम्भावित है। वस्तुत शिक्षा वह प्रकाश स्तम्भ है जिसके आश्रय से गहरे अंधकार को चीरता हुआ मनुष्य सुन्दर प्रकाश की ओर अग्रसर हो पाता हैए मानव विकास के विविध आयामों में उसके शरीर, बुद्धि, मन और आत्मा का

संस्कार अपेक्षित होता है जो कि शिक्षा के द्वारा ही सम्पन्न होता है। संसार के सर्व प्राचीन ग्रंथ वेद में इसी तथ्य को श्तमसो मा ज्योतिर्गमयए मत्युमा अमृतम गमयश् असतो मा सदगमय इत्यादि माध्यमों से दृढ़तापूर्वक अभिव्यक्त किया गया था। संस्कार के बिना कोई भी व्यक्ति या पदार्थ किसी भी कार्य के लिए उपयुक्त नही होता। कच्चे घड़े में जल का संधारण सम्भव नही है। इसी प्रकार भली प्रकार खेतों की जुताई और सफाई न होने पर उसमें कृषि कार्य सम्भव नही है। शिक्षा के प्रसार में और शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वन में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जाती है। शिक्षक ही वास्तव में वह योजक कड़ी है जिसका राष्ट्र निर्माण में बहुत बड़ा योगदान होता है। क्योंकि षिक्षक ही विद्यार्थी वर्ग का चरित्र निर्माण करता है और आज का विद्यार्थी ही कल का भावी नागरिक या राष्ट्र निर्माता है डॉक्टर कलाम अपनी पुस्तक अदम्य साहस में लिखते हैं कि षिक्षकों का महान ध्येय युवा मस्तिष्कों को तेजस्वी बनाना है तेजस्वी युवा धरती पर, धरती के नीचे और ऊपर आसमान में सबसे सषक्त साधन है। षिक्षक की भूमिका उस सीढ़ी जैसी है जिसके जरिये लोग जीवन की ऊंचाईयों को छूते हैं लेकिन सीढ़ी वहीं की वहीं रहती है। डॉक्टर कलाम का मानना है कि सच्ची नैतिक षिक्षा से समाज और राष्ट्र का उत्थान होगा, सितारों को न छू पाना कोई शर्म की बात नहीं, किन्तु सितारों को छू पाने का सपना ही न होना वाकई शर्म की बात है। कोई देष वैसा ही होता है जैसे उसके नागरिक होते हैं जनता की नैतिकता, जीवन मूल्य और चरित्र राष्ट्र की बनावट में बड़ी बारीकी से गुथे रहते हैं। डॉ. कलाम का कहना था कि सामूहिक स्तर पर यह सकारात्मक भाव जगाना होगा कि हम अपने देष के लिए क्या कर सकते हैं जिससे हम सभी लाभान्वित हो सकें। जब प्रत्येक नागरिक सम्मानपूर्वक खुषहाल जिन्दगी जीने के लायक हो जायेगा तभी देष और दुनिया में खुषहाली आयेगी तथा देष की तरक्की होगी।

प्रस्तावित शोध ग्रन्थ का शोध केन्द्र बिन्दू भारतीय राष्ट्र के महान लोकप्रिय वैज्ञानिक एवं महान चिन्तक तथा शिक्षाविद् जननायक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के शिक्षा सम्बन्धी उपयोगी विचारधाराओं पर केन्द्रित है। इसके अनुशीलन से या इसको अंगीकार करने से वर्तमान भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक परिवर्तन आऐगा इसमें संदेह नही है तथा इसी से राष्ट्र प्रगति के राह पर अग्रसर होगा।

आधुनिक राष्ट्रीय चेतना के निर्माण के लिए डॉ. कलाम की विचारधारा एवं उनकी दृष्टि में शिक्षा का जो ढाँचा हो सकता है उसका आकलन प्रस्तावित शोध ग्रन्थ के व्यापक स्वरूप पर पड़ सकता है।

8.1.2 अध्ययन का औचित्य

शोधकर्त्री ने डॉ कलाम के साहित्य के अध्ययन से यह महसूस किया कि उनके व्यक्तित्व, बुद्धि एवं विचारों की योजनाओं का तथा उनके शैक्षिक स्वरुप का शिक्षण कार्य में प्रयोग किया जाये तो बालक की रूचि के अनुरूप उसकी क्षमता का व्यवहारिक विकास संभव हो सकता है। वर्तमान शिक्षा प्रणालियों को देखते हुए शोधकर्त्री ने महसूस किया कि डॉ. कलाम के शिक्षा साहित्य एवं विचारों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली एवं पाठ्यक्रम में समान रूप से महत्त्व देना अनिवार्य समझा जाये जिससे बालक के जीवन के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का समाज एवं राष्ट्रीय निर्माण में एक नयी चेतना जागृत की जाए तभी डॉ. कलाम के शैक्षिक स्वरुप का राष्ट्र निर्माण में सही उपयोग हो सकेगा। डॉ. कलाम ने एक वैज्ञानिक के रूप में अन्तरिक्ष एवं कृषि सम्बन्धित नवीनतम तकनीक की खोज कर भारत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने का स्वप्न चरितार्थ किया। षिक्षक, साहित्यकार एवं एक दार्षनिक के रूप में उनके द्वारा भारत को अग्रसर करने के लिए विभिन्न योजनाओं की रूपरेखा बनाई गई। भ्रष्टाचार मुक्त भारत की कल्पना एवं युवकों पर भरोसा करने का अदम्य साहस जो डॉ. कलाम ने दिखाया वह स्वावलम्बी भारत के राष्ट्र निर्माण में मील का पत्थर साबित होगा। उन्ही तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने डॉ कलाम के प्रेरक व्यक्तित्व, उनकी सृजनषीलता, कला और साहित्य के साथ उनका लगाव, विज्ञान और अध्यात्म, रचनात्मक नेतृत्व, उनका जीवन चरित्र, उनकी कार्यषैली को अपने शोध के द्वारा आगे गति देने का औचित्य समझा है यही शोधकर्त्री का मूल उद्देश्य और शोध का औचित्य समझा जाएगा।

8.1.3 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली

राष्ट्र निर्माण में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के शिक्षा दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

8.1.4 शोध विधि

प्रस्तुत शोद्य कार्य का विषय क्षेत्र ऐतिहासिक एवं वर्णात्मक स्वरूप से संबंधित है, जिसके अन्तर्गत प्रमुख भारतीय विचारक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक चिन्तन और शिक्षा दर्शन के तथ्यों को संकलित करने व खोजने के लिए ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया जाएगा। भारतीय विचारक डॉ. कलाम के शैक्षिक चिन्तन एवं शिक्षा दर्शन तथा राष्ट्रीय शैक्षिक विचारों को जानने के लिए विद्वानो व शिक्षाविदों, शिक्षा मनीषियों, पुस्तकालयों, संग्रहालयों, धार्मिक संस्थानों व सुधीजनों से साक्षात्कार करके तथ्यों का वर्णन ज्ञात किया जाऐगा, जो कि वर्णात्मक विधि के अन्तर्गत सम्भव हो सकता है।

8.1.5 अध्ययन का परिसीमन : पत्र, पत्रिकाएं एवं डॉ. कलाम से सम्बंधित साहित्य

8.2 द्वितीय अध्याय : सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

8.3 तृतीय अध्याय : डॉ एपीजे अब्दुल कलाम का जीवन परिचय

8.4 चतुर्थ अध्याय : डा. कलाम के शैक्षिक विचार

8.5 पंचम अध्याय : डॉ कलाम का शिक्षा दर्शन

8.6 षष्टम अध्याय : डॉ कलाम के शैक्षिक विचारों में राष्ट्रीय मूल्यों की चेतना का विकास

8.7 सप्तम अध्याय : डॉ कलाम के राष्ट्र निर्माण एवं कर्म योग के लिए शैक्षिक विचार

8.8 अष्टम अध्याय : राष्ट्र निर्माण में डॉ. कलाम की भूमिका

8.9 नवम अध्याय : डॉ कलाम के शैक्षिक विचारों की प्रसांगिकता

8.10 दषम अध्याय : प्रस्तुत शोध का निष्कर्ष, अध्ययन के सुझाव, शैक्षिक उपादेयता

8.11 एकादष अध्याय : शोध सारांश, परिशिष्ट, सन्दर्भ ग्रन्थ सूची एवं डॉ कलाम से सम्बंधित चित्र आदि

9. शोध कार्य में लगने वाला समय (लगभग 24 महीने)

प्रथम अध्याय	:	तीन माह
द्वितीय अध्याय	:	दो माह
तृतीय अध्याय	:	दो माह
चतुर्थ अध्याय	:	दो माह
पंचवा अध्याय	:	दो माह
षष्टम अध्याय	:	तीन माह
सप्तम अध्याय	:	दो माह
अष्टम अध्याय	:	दो माह
नवां अध्याय	:	दो माह
दशम अध्याय	:	दो माह
एकादष अध्याय	:	दो माह
टंकण एवं बाइंडिंग एक माह	:	एक माह

10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Good, C-V- (1959) Dictionary of Ed u- Newyork MC- Grow Hill Co- P- 48
2. Broudy, H-S- (1961) Building a Philosophy of Edu- New Delhi] Prentice Stafll of India Pvt- Ltd-
3. Bruhacher, J-S- (1962) Modern Philosophies of education Newyork] MC- Hill Grow Book Co-
4. Buch, M-B- – A Survey of Education Research in India-
5. Buch, M-B- – ÞSecond Survey of Research in Education on Baroda Society for Educational Research Development (1972&78)
6. Buch, M-B- – ÞSecond Survey of Research in Education (1978&83) NCERT, New Delhi
7. Buch, M-B- – ÞSecond Survey of Research in Education Centre for Advance Study in Education M-S- University Barody (1974)
8. Best, J-W- (1978) Research in Education (3rd Edition) New Delhi Prentice Stall of India Pvt- Ltd-
9. अग्रवाल जे.सी., स्वतन्त्र भारत में शिक्षा की प्रगति, आर्य बुक डिपो नई दिल्ली–78
10. शर्मा, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद – भारतीय दर्शन, आगरा 1979

11.चौबे, एस.पी. शिक्षा के दार्शनिक आधार, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–1980

12.अग्रवाल एस.बी. भारत में शिक्षा का आलोचनात्मक अध्ययन, अमिताभ प्रकाशन इलाहाबाद–1983

13.पाण्डेय, संगमलाल, गाँधी का दर्शन, इलाहाबाद दर्शनपीठ प्रकाशन, 1985

14.डॉ. के.के. वशिष्ठ, डॉ. शर्मा – भारतीय शिक्षा की नई दिशा इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ 1987

15.सूद, ज्योति प्रसाद आधुनिक राजनीतिक विचारों का इतिहास मेरठ, के. नाथ एंड कंपनी, 1995

16.शर्मा, वैधनाथ प्रकाश, विश्व के महान शिक्षा शास्त्री, पटना महावीर हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1997

17.पाल, एस.के. एवं मदन मोहन, शिक्षा दर्शन, इलाहाबाद, कैलाश प्रकाशन, 1997

18.दुबे, रमाकान्त, विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर 2002

19.गुप्ता एस.एन. एवं मदन मोहन, महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री, इलाहाबाद कैलाश प्रकाशन, 2002

20.नई शिक्षा – राष्ट्रीय शैक्षिक मासिक पत्रिका प्रद्यान सम्पादक सतीश कुमार चतुर्वेदी 30 जुलाई 2015

21.नायर, पी.एम. करिश्माई कलाम प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 2008

22.कलाम, ए.पी.जे. अब्दुल अदम्य साहस राजपाल एंड संस, दिल्ली

23- Kalam, APJ ABDUL Wings of fire (1999), Universities Press (India) Pvt. Ltd.

24- Kalam, APJ ABDUL IGNITED MINDS (2002), Pengum Books, New Delhi

25- Kalam, APJ ABDUL India 2020 A Vision for New Millennium, Pengum Books, New Delhi

26- Kalam, APJ ABDUL Turning Points A Journey thrw Challenges (2012), Harper Collims Publisher India

27- Kalam, APJ ABDUL INSPIRING THOUGHTS (2007), Rajpal & Sons, New Delhi

28- Kalam, APJ ABDUL & Srijan Pal Target 3 Billion (2013), Pengum Books, New Delhi

29- Kalam, APJ ABDUL Beyond 2020, A Vision for Tomorrow, Pengum Books, New Delhi

APPENDIX –III

CERTIFICATE BY SUPERVISOR

Certified that:-

1. I Prof. **MANISHA VERMA** hereby give my consent to guide the research work of Shri/Km./Smt **NEETU JAMINI (PANDIT)** on the topic **Roll of Dr. APJ Abdul Kalam in Nation Building** if he/she is registered for the Ph.D research work.
2. To the best of my knowledge, the subject selected by the candidate for research has not been studied and is not being studied so far in any university.
3. The subject has sufficient work load to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline and bibliography etc. submitted by the candidate.
5. Necessary facilities are available in the Department for the above research work (certificate from Principal/ Head of Dept. with regard to facilities available is enclosed.)
6. At present I have in all …………………………………………(number)research scholar(s) registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application being forwarded for registration is……………………………
7. The candidate is not in close relation to me………………………………………
   (the term ‘close relative’ includes 'Wife, husband, son, daughter, sister, nephew, niece grand niece, grand nephew, uncle, aunt, first cousin son-in-law, daughter-in-law and nephew, niece, grand niece and nephew of supervisor's wife'.)

Signature of the
Supervisor with date

Certified that available facilities in the department will be extended to Shri/Km./Smt……………………………………………………………for research work if he/she is registered for Ph.D.

Signature of the Principal/	Signature of the Head of the
Director of the Institution	क्मचंतजउमदज